

मोक्षार्थिना प्रस्तुहं द्वानन्दद्विः कार्या ।

श्री जैन धर्म प्रकाश

डाइलॉ

पुस्तक ७७ सं
न्प्रकृति
२५ मी. अपार्टमेंट



वीर सं., २४८७
वि. सं. २०१७
६. सं. १८८०

चित्तमंतमचित्तं चा,
अप्यं चा जइ चा वहु ।
दंतसोदणित्तं पि,
उगर्हासि अज्ञाहया ॥

तं अप्पणा न गिण्डंति,
नो चि गिण्डावपुं परं
अन्नं चा गिण्डमाणं ॥
नाणुजाण्णिं संजपा ॥

उ से डे निर्वाप हो, थैडी होय के
वस्तुआनी आत्मा तो थु ?
परन्तु, ही नात्मवाणी सणी ज्वी तुच्छ वस्तुने पछ,
तेनां अने पूछाओ वि, संयमवाणी भुज्यो औते
जले लाता नथी, एजन पासे एवो अदत वस्तुने
संखावाता नथी, अने जे डेह अवुं बेतो होय तो, तेने
संभवि पछ आपता नथी.

—महापीर घासी

प्रगटकता :

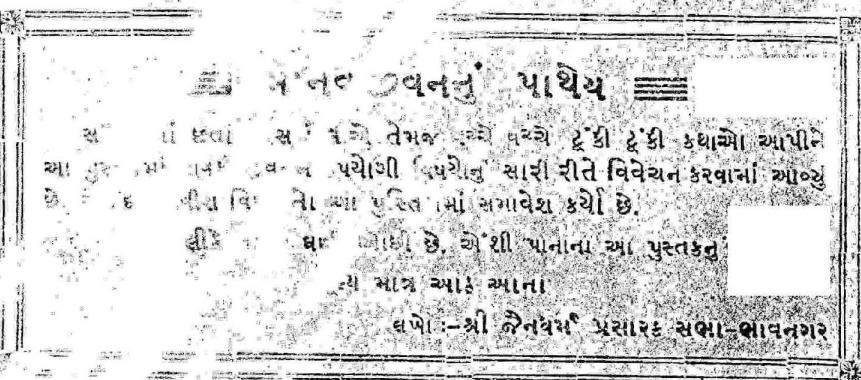
श्री न धर्म प्रसारक संलाल : लालनगर

દી જીન ખર્મ પત્તાથાં : : વર્ષ કુ મુ : : વાર્ષિક લાયાળ 3-4-0
પ્રાણેજ સહિત

अनुक्रमणिका

- | | | | | | |
|---|--|------|------|--------------------------------|---------------------------------------|
| १ | कूपमध्यार्थिनींहवा | | | | (मुनिशी हेमअन्नविजयद) |
| २ | सांतिक आशिष | | | | (मुनिशी लालकृष्णिन) |
| ३ | क्षी कैरे धार्त मठाथा जर्वर्वतु रहो ? | | | | (हृदयादान नवीनादान) |
| ४ | मालार नवे चैथ | | | (श्री गणेशांतु ईशायदं "गोपी") | |
| ५ | मृतनयपीलिनींहन | | | | (शाह दीप्ति शुभा युवा) |
| ६ | प्रकृत नामेऽपां भाप में सुखल धर्म साधना के अन्ते खुली | | | | |
| | आ-भिन्निः सांसारी भूम्यांत डाँडु स्थापना के (श्री आदानंद ही) | | | | |
| ७ | वर्द्धमान महालीर : २८ | | | | (अ. २८) |
| ८ | तीर्थंकर्ता विल्लुति : अतिशयी अने आतिहारी : ७ | | | | (हीर वासुदेव A.N.A.) १३ |
| ९ | श्री प्रशोतस्त्रार्थशतक-सार्थ : ३१ | | | | (आव्याख्य श्री विजय कौर संघरण ग.) १६ |

શ્રી જગે ક્ષત્રમણી વિચિઠેડતા મહિના
એના લાઇફ બેસિયલ પણ છે, રોજાના કષ્ટી
૨૦૧૭ની સારાના કષ્ટીઓ પણ આ
માસિકના આંદોળાઓ
સાથે હોય કે અંલાણી
નાના અંદું કરીયે



पुस्तक ७७ खं
अंक १

कारतुक

प्रिय अंक. २४८७
वि. सं. २०१७

नूतनवर्षाभिनन्दनम्

(मन्दाकान्ता-वृत्तम्)

अङ्गानान्धं जगति प्रसुतं सेव्यसार्वार्कगोभि-

दूरोद्धित्वं जिनवरवचः पायकं धीरमान्यम् ।

चेतो रथ्यं विलसाततरां गद्यपद्यप्रवन्धै-

नित्यं जीवान् निरूपपमगुणं जैनधर्मपकाशम् ॥

रचयिता-

मुनिश्री हेमचन्द्रविजयः

શ્રી કૈતબર્મ પ્રકાશ જ્યોતસું તે જ અવિયળ તપણે
નૂતન વર્ષ વીકાસ સંવત એ હજાર સતરની
માં ગાલિ ક આ શિખ

(જિનને કોણો પ્રથમ-એ રાગ)

શ્રી વિર ગ્રહને ગૌતમ શુરુને સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ સમરો.
 જૈન કુળમાં જન્મ ધરીને શુદ્ધ સમહિતની શ્રદ્ધા કરીને,
 નાં દેહ અભનાર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 ધર્મ તણો ને ધર્મ ન જણુ સત્ત વ્યાને નબ પ્રાણણુ,
 રખડો અનાત સંસાર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 મમતપણું કે હર કરે છે તે આ સંસાર તરે છે,
 પ્રવનન સુણી ઉધર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 કોમ કોથ ને મોહ કોલ કે અંતરંગ શાનુ જેહ ખરા છે,
 રાહન પણ ખરે સુવાસ ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 જ્યોતસું જ્યોતની દૃષ્ટિ લગાવો આત્મતણી શક્તિ પ્રગરાવો,
 તપણ્ય ધરી હૃથીયાર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 નૂતન વર્ષસું સાર્થક કરવા હાન શિયળ ને જાવજ ધરવા,
 તેં હાડીયા ને પાર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 જન્મ મસણુના હુંઘ અતિશે જર જેનેત પણ સ્થિર નહી છે,
 અતિશય રાગ ન ધર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 વિર વચનને હૃદય ધરીને ધારવૃત્ત અંગિકાર કરીને,
 ચેપળ ચિત નિવાર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 લક્ષ ચોરાશી ભવમાં ભરીયો હુંઘ અનંતા નર્કનાં અમીયો,
 તવ ધર્મ સ્વીકાર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ
 પણ સંવત સતરસું વર્ષ પામો સુખ સંપત્તિ ને હુર્ષ,
 ગુરુ વચન સ્વીકાર ભવિયણુ સમરો નિત્ય સવાર ભવિયણુ

—મુનિ ભાસ્કરવિજયલ

|| (૨) ||

॥ श्री जैन धरम अकाशा जयवंतु रहे !

श्री शाचनपति प्रभु वीरजु है, जान आज निर्विः
जैन जगत लाणु वित्तय थथै है, सर्वव तिमिर हैताय....

हो लविजन ! वीर प्रभु शुणु गाय. १

जौतमल्ल के रहा याँड़ा है, अडता श्री जौतमल्लवाम,
जैदा हैरे के बाबी है, लूपिक ने उपवास;

हो लविजन ! मालुगारी प्रभु थाय, हो लविजन ! वीर प्रभु शुणु गाय. २

प्रभु अरता निज लावर्मां है, जान देह स्वामाव,
जौता पाणु बड़ी बीर रागमां है, वीरसाम जरी समझाय;

हो लविजन ! जौतमल्लने हुआ थाय, हो लविजन ! वीर प्रभु शुणु गाय. ३

जौतमल्लां के दिनने है, पछु वीरजु सुनिलें थाय,
“काँचे प्रभु तमे कर्तुः कारमुः है, सुन्धी शे रहेवाय;

हो लविजन ! पर्याताप अति थाय, हो लविजन ! वीर प्रभु शुणु गाय. ४

रूपक अरु डोषु छेद्दो है, डोने कहीश हुं स्वाम,
जौता जौता केम अगोः कुर्या है, ‘जौयम ने हवे शी सहाय;

हो लविजन ! जौयम दिव हुआय, हो लविजन ! वीर प्रभु शुणु गाय. ५

बन्दां बन्दा जौतम भूरता है, वीर वियेगे भन भाय,
बंदना बंदना वीरने है, हो चाचुं जान समझाय;

हो लविजन ! जान हीपक प्रकटाय, हो लविजन ! वीर विभु शुणु गाय. ६

हुम तो प्रभु वीतराग थया है, राग न होय मनमांय,
रूप रही ज्ञे रागनी है, क्यांधी सुक्षित वधाय;

हो लविजन ! उन्नवण पंथ हेयाय, हो लविजन ! वीर विभु शुणु गाय. ७

हो ! बंदन के शुणीयल शुरुने, पास्या के डेवणजान.
श्री वीर विभुने जौतम स्वामीने, बंदन शत शत वाय;

हो लविजन ! बंदन अनंत वार हो लविजन ! वीर विभु शुणु गाय. ८

नूतन वृपनी शुल कामनाओ, सुखदायी सैने थाय,
दीपक भगटे धर धर आओ, मंगलनाट सुणाय;

हो लविजन ! मंगलनाट सुणाय, हो लविजन ! वीर विभु शुणु गाय. ९

—हुर्वालास शिक्षोवनहास दोर्शी, उभेणीयावद्

(हरि गीत)

सागर जुओ ए कृपणुनो सरदार जगमां जाणिओ,
नहियोतालूं बेशुं करे जब क्षु न आपे मानियो;
ए मंडुर चीकु नीर सहु आइ करे धारवारमां,
डैध न एने पी शडे ए भुद्धि है जस वितमां. १

सागर

अने

मेघ

तेथी ज खाइमां पड्यो छे अवनिना पेडामां,
संथड करे पछ दान नडी आपे कठी उपकारमां;
रापे छुपावी रल मधु सुक्ताहेणो खडु निज करे,
एके न आपे दानमां निज हाथथी तजु भानने. २

पछु डैध लटारा हृषुकी ए सहु लुरी गया,
ए हाथ वसरो रही गयो श्रीमंत जगमां डैध वयाक;
तेथी ज खाइमांहु पड्यु एहता करमे अहो!
उत्तिन एनी कठी थवानी नीचता परभी जुओ. ३

खडु आरवाही वा हेंगो ए हुनी छाती थटी,
नाच अने होडे सदाना परम कौतुक आदरी;
पछु नीचता छोडे न सागर नित्य गर्तामां रही,
ने कृपण जन ते जायेहो छे लवण सागर सम सही. ४

ए मेघ नृप देई शुद्ध जब निज अगमां उपह यहे.
अति वायुवेगे धन समुन्वल श्वेत थर्ह नसने अहे,
गर्जारवे आमंत्रो सहु लोक ने आवो कहे,
द्यो द्यो अमितज्ज्व धोषणा धूम जेहता मुण्डी वहे. ५

लो यातडो! पाखु तमेने शुद्ध जब तुम कहेमां,
आ कंठ पीने तुम थाय्या शांति धारा अगमां;
आनंद्यी नाचो भयूरौ पाख छत्र धरी शिरे,
द्ये द्ये करी जे मोह आपे रसिक कविज्ञ भन हरे. ६

आवो कृपकज्जन श्वेतमां तुम अवित जलवृष्टि कर,
धनधान्य पाडे हरित श्यामव श्वेतमां हुःमो हरु; ६
नहियो अने कासार सर्वे शुद्ध जलथी हु लड,
सर्वस्वने आपु समर्पु हरित करता सहु तड. ७

कवि-
साहित्यचंद्र
भास्त्रचंद्र
हीरचंद्र,
भावेगाम

ए अतदाता मेघसम नडी के अनेशो राजवी,
उपकार करवा स्वशुण धारी सुक्ति एनी भानवी;
ने निरक्षिमानी धन समो उपकार करतो लावथी,
आलुन्ड भाजे ते तरे संसारवाचिधि वेगथी. ८

नृतन वर्षाभिनंदन

वि. क्र. २०१७ ना वर्षे “श्री नैन धर्म प्रकाश” छेतेर वर्ष पूर्ण करी सत्येतेरभा वर्षमां प्रवेश करे छे. गत वर्षमां मुनि महाराजश्री लाल्करविजयल, मुनि महाराजश्री चुगेन्द्रविजयल, मुनि महाराजश्री महाप्रभविजयल, मुनि महाराजश्री नित्यानंदविजयल तथा श्रीखुत बालचंद लीचाचंद साहित्यचंद, श्रीखुत लीचालाल रसीकलाल डापडीया, श्रीखुत लगवानदान मनसुःप्रभास्त तथा डा. वद्वलदास नेषुधीभास्त वजेइनो तेमना प्रद्यो भाटे अने तेमना शब्द देखें भाटे आलार मानवामां आवे छे अने नृतन वर्षमां तेवा सर्वेनो सहजर चाकु रडें तेवी आया राजवामां आवे छे. श्रीखुत मैडलाल हीप्यांद चौकर्ता पोताना सुंदर देखें नियमित रीते प्रकाशमां मैडलता हला, तेमना अवसान्तथी आ भासिकना प्रकाशनमां तेमना देखेनी ज्ञाए ज्ञानेशे तेम लाजे छे.

गत वर्षमां ज्ञानानी प्रगति फैटे ने लुकडे आगण वधी रही छे. रशियाए ऐ झुतीच्याने रेषेटमां पूर्ववीना वातावरणुनी खडार मैडली हती अने ते रेषेटने पूर्ववीनी प्रदक्षिणा करीने धरेके रुप्यो नीचे उतारवामां रशिया फैटेमां धरेल छे. थाई नं दिवसेमां रशिया भगुयने आकाशमां मैडलीने नीचे उतारवानो विचार राखे छे. अमेरिका पछि रेषेटमां प्राणीच्याने मैडलवानो प्रथत्न करे छे पछु अमेरिकाने लेइचे तेवी सद्गता भणी नथे.

हुनियाना लगलाग अधा देशो तरक्क नव्वर नांभता रूपपछु ज्ञानेशे के हुनियाना डोइ पाण देशमां आके शांति नथी, दरेक देशतुं राजकारण ज्ञालामुखीमां उक्गता लावारस जेवुं छे. थाई नं वर्षमां राजकारणमां धडको थरो अम सौ माने छे. वणी ओइ देश धीन देश तरक्क अविद्यासनी लागणी राखे छे, अधा राजनैतिक पुरुषे शांति मध्ये छे कर्तव्य के शब्द सर्वानभमां अग्नेः दीपीयानो धुमाडे थाय छे. शांति स्थापवा भाटे अत्यारे अधा राजकीय नेताच्याः अमेरिकामां लेगा धरेल छे, अने सहु शांति स्थापवा भाटे पोताना विचारे रन्नु करे छे. भग्नालाग्यनी वात छे के अधा देशो धर्छ्ये छे के आरत शांति स्थापवामां अग्नेयनो लाग ले.

‘उत्तराध्ययन’मां नीचे प्रमाणें ओइ बहु ज भननीय वाक्य छे मोक्षार्थिना प्रत्यह ज्ञान-वृद्धि कार्य ज्ञानी मुनि महाराजेचे ज्ञान अने हियाने सुषितानो मार्ज कहो छे. आके समाजमां डिया नं ज्ञेवामां आवे छे. पछु शान्तुं नाम निशान लेवा भग्नु नथी नैन गुहाध्ये वर्ष दरम्यान एकाद बो धार्मिक पुस्तकेतुं अध्ययन उरुं ज लेइचे अने हिवसमां एकाद कवाक तो धार्मिक पुस्तकेतुं वांचन उरुं ज लेइचे. सलाना धार्मिक पुस्तकेतुं वेचाणु गया पांच वर्षांची नही नं जेवुं छे ते आवावे छे के समाजमां धार्मिक वांचन करनारा लगलाग बहु ज आएछा छे.

आणेक अने आगिकाच्याने धार्मिक शिक्षण डेवा प्रकारतुं आप्युं तेने भाटे आपणी मुण्य धार्मिक संस्थाच्या ओइ भत थती नथी ते अझसेसती वात छे. आपणा विधिनिधानमां मुण्यवे स्कूलोनी ज्ञर पडे छे, तेथी दरेक पाठेशागानी मुण्य इरक चे छे के दरेक विद्यार्थीने सत्यजान अणेणा प्रमाणमां शीघ्रवतुं लेइचे. साथे सूत्रोना अर्थतुं ज्ञान डेव तो सातः पाण व घारे पडतुं सूत्रोना अर्थ पर लार आपवानी ज्ञर नथी एस श्रीखुत राजगोपालाच्यारे पाण ओइ वरपत क्षेलुं हतुं. वणी नैन धर्मना सामान्य ज्ञान भाटे तो धार्मिक शिक्षण दर अठवाईचे के दर पाखवाडीचे भोटा विद्यार्थीच्याने अने भोटी अड्हनेने लेगा करी वातचीतहारा.

(६)

श्री कैत्ति धर्म प्रकाश

[कारतक]

सामान्यज्ञान आपवुं के केथी धार्मिक अभ्यास करवामां विद्यार्थीयोः पर नडामौ छोले पठे नहि. ऐत्यवंडन विधि, अमुक स्तवमो वर्गे जहर शीखववा नेहियो. अत्यारे व्यवहारिक शिक्षणमां परीक्षारूपी राक्षसीने केम तीवांनलि आपवी तेने माटे योजना विचाराथ छे त्यारे अहसोसनी वात छे के अमुक परीक्षा लेती धार्मिक संस्थाओः तेने वधारे पठतो. लार आपवा अथल एरे छे. धार्मिक अभ्यास करनारायोने उत्तेजन अर्थे देखालरशीयो आपवानी भास जहर छे.

मे वर्षथी नवकार भहामंत्रो एक लाख नप करवानी अने नवकार भहामंत्र पर सुंदर लेणो. मासिकोमां आपवानी प्रवृत्ति शङ् थेल छे ते प्रशांसवा योग्य छे. नप वर्गे करनारा तेमना अनुबोद्धो देखो द्वारा रक्तु करशो तो समाजने लाभ थेहो.

धार्मिक अनुष्ठानमां वधारे पठतो अर्थे करवानी लालू हरीकार्प बाली रही छाय तेम जाण्याय छे अने समाजना हजारो डपिया आवा अनुष्ठानो भपकाथी उक्षवामां अर्थाय छे, आपवा अनुष्ठानो आणा लपकाथी अने आणा अर्थाये उक्षवामां आवे ते छायच्या जेग छे.

आ वर्षे डेन्क्सन्सतुं एकवीक्षणुं अधिवेशन पंलणमां लुधियाचा शहेदमां लसयेव इतुं; तेमां पंलणना प्रतिनिधियो. सिवाय थीन प्रांतना प्रतिनिधियोनी संज्ञा भहु व ओछी हुती. डेन्क्सन्समां सारी संज्ञामां प्रतिनिधियो. हाजर रहे तो व डेन्क्सन्स लजी उडेवाय, श्रीमंत वर्ग आवा अधिवेशनमां हाजरी आपवानी करन समजे अने केम एताना सगावहालांयोना लग्न लेवा सामाजिक प्रसंगोमां हाजरी आपे छे तेम डेन्क्सन्समां हाजरी आपे अने समाजनी उन्नी केम करवी तेनी विचारणामा रक्ष दें. डेन्क्सन्समां एम पण जणातुं हतुं के समाजमां कार्य करनारायोनी योट छे. कार्य करवानी धगशावणा युवानोने तेमना कुटुंबेना. लरायपेषण्युनी वितामांथी सुक्त करवामां आवे तो आ योट सहजमो पुराय तेवी छे. आ कार्य भाटे डेन्क्सन्से एक सारूं योतुं इंड लेणुं करवानी जहर छे.

लावनगरमां हावावडीमां एक सेनेटोरायमतुं भक्तान अंधाववा शेठी हीरावाल अमृतलाले इपिया सवा लाखानी रक्म अनेना लैन संघने आपेक छे, अने श्री संघे अवेनी सुंदर स्थान तरीके गण्याती हावावडीमां सुंदर अने सगवडतावाणा बोडी. अंधाववानुं शङ् उडेल छे अने आ वर्षनी शउम्यातमां बोडी अंधाइ लशो; केथी केमने आरोग्यनी प्राप्ति भाटे वे चार महिनानो आराम लेवानी जहर लहो तेमने आणा अर्थे रहेवानी सगवड मग्यो, लैन बहुच्याये हवे युहे रुहे स्थगे सेनेटोरीयमो अंधाववानी जहर छे के केथी मध्यम वर्गना देको योतातुं स्वस्थ्य आणा अर्थे-सुधारी शडे.

लावनगरमां शेठी आणुंदृष्ट पर्योजनाना. वारसो तरक्षी भगोल वेरीटीनी रक्ममांथी एक सार्वजनिक डीपोन्सरीतुं उड्हाटन अवेना. श्री संघे उडेल छे, तेने लैन अने लैनेतरो सारी संज्ञामां लाल ले छे. अत्यारे हवावाडीमां एक्टो लप्ये अर्थे थाय छे के मध्यम वर्गने ते अर्थ योसाय तेम नथी; भाटे इक्त नलुवी किमते ढवा वर्गे भणी शडे तेवी व्यवस्था छुच्छवालेग छे.

लावनगरमां वसता आशारे पंदरसो लैन कुटुं आमांथी लगभग पचास टका कुटुं यो मुख्येवीथी लुवन निवार्क एरे छे. आ वर्षे यून्ये पन्यासलु सुमोषसागरलु अने मुनि भहाराजशी भानुविक्षयलुना उपहेशी साधार्मीक लाईयोने भहद उक्षवा भाटे इंड करवामां आवेल छे, पण लेहिये तेहुं सारूं इंड लेणुं थेल नथी. अत्यारे हाइस्ट्रुवेमां अने डेलेजोमां भणुता

પ્રભુ નામનો જપ એ સુલભ ધર્મસાધના છે અને ખુલ્લી આત્મનિદ્બ સાંભળવી અત્યંત કઠળ સાધના છે

દેખક : શ્રી બાલચંદ હોરાચંદ “સાહિત્યચંદ”

મતુથને આ સર્વારાં બંધનોથી મુક્ત થવું એવ અંતિમ સાધયિંદું છે. અને હેતું જોઈએ, એવ અવાજ શાસ્ત્રકારી પોકારીને કહે છે, ગમે તે પ્રવચનતું અંતિમ સાધ ઉપસંહરમાં ‘મુક્ત થવું’ જો જ હોય છે. દરેક ધર્મમાં શાખ લક્ષે જુદી હોય પણ અંતિમ સાધ તો જો જ બતાવવામાં આવેલું હોય છે, જો રૂપણ જેવામાં આવે છે. ત્યારે આપણે મુક્ત થવા જ્યા બંધનાંથી એ રૂપણ થવું જોઈએ. જ્યારે મુક્ત થવાનું હોય ત્યારે બંધન હેતું જ જોઈએ એ દૃશ્યિત થાય છે. આપણે ડેર્ચ બંધનમાં બંધાવેલો છાંચે કે ડેમ એ પહેલા આપણે જાણ્યું હેતું જોઈએ. અને આપણે ડેર્ચપણું પાશમાં જડાદ ગયેલા. છાંચે જેણી આપણે આજી કરી દેવા જોઈએ. તેમ જ જે બંધન હોય તો તે કેવી જાતતું છે, છુદી સકાય તેવું છે કે નહી એ પણ સુમજવાની જરૂર છે. સાથે સાથે એ બંધનો ડેર્ચએ તોડી બતાવ્યા છે કે શું અને એવા બંધનો ડેર્ચ તોડ્યા હોય તો તે શી રીત તોડ્યા, ક્યો ભાર્ગ તેમણે અતુસરો અને તે ભાર્ગાંથી આપણે સુલભમાં સુલભ કર્યો ભાર્ગ અતુસરી શરીરો રેમ થીએ, તેનો અવસ્થ નિયાર કર્યો જોઈએ.

ધર્મશાસ્ત્રનો પત્રિલાસ જોતા એમાં અનેક સંત મહાત્માઓ, યોગી મહાત્મા એ બંધનો તોડી મુક્ત

વિવાદીઓને તેમના અભ્યાસમાં મહદ કરવા માટે ડેલેજ શ્રી આપવાની અને પુસ્તકો આપવાની ખાસ જરૂર છે. વળા જે ખહેનો અને લાલચેપ ગુહ ઉદ્ઘોષ શીપવા માગતા હોય તેમને પણ મહદ કરવાની જરૂર છે, તેથી આ ઇંગી ઉપયોગ થયેલ રૂપે તેમને મહદ કરવામાં નાપરાય એમ ધૂઢ્યા જોઈએ. આ નૂતન વર્ષ સર્વે લાઇફ ચેમ્બરીને, સભાસદ અધ્યક્ષોને અને પ્રકાશના શાહીકણ્ઠ-ધૂઢ્યાને સુખૃત્પ નિવડા એવી પરમાત્મા પણે આર્થિના છે.

— (૭) —

(૮)

શ્રી કૈન ધર્મ પ્રકાશ

[કારતક]

ધર્મસાધના અનેક રીત થઈ રહે છે, પૂર્વ કર્માના ઉદ્ઘયથી દરેક ભાણુસાનો સ્વભાવ જોગેલો હોય છે. આ જગત વિશ્વાસને હોવાને લાયે દરેકનાં એકાઈ શુણુની ભાગી વધુ હોય છે. ત્યારે જીવને એ શુણુની ભાગી એકાઈ હોય છે. એ પણ શુણો સત્ત્વ, જી અને તમેશુણુના નામથી ઓળખાય છે. ડોઢ ભાણુસમાં સત્ત્વશુણુની ભાગી વધારે હોવાથી તેની સાંબિક વૃત્તિ બની જય છે, અને તેનું વલણ ધાર્મિક વૃત્તિ, પરોપકાર કે ઇડા કર્મો તરફ વધારે હોય છે. એના હોયે સહસ્રા અન્યાય કે ધર્મનિર્દિષ્ટ આચરણ થતું નથી. એના ભાણુસમાં રનેશુણુ કે તમેશુણુ હોતાજ નથી એવન નથી. પણ એ શુણો પોતાતું આસન તાં નિયર કરી શકતા નથી. એમ જ રનેશુણુ પ્રધાન ભાણુસ ધર્મદ્વિષાએ કરી જય તે પણ તેમાં અહુકાર, વડાઈક પોતાની કાર્તિ વિગેરની લાલસા વિશેપ વર્ધી જય છે. અને એના સાંબિક શુણો પણ નિષ્ઠા થઈ જય છે. અને તમેશુણુ પ્રધાન તો હેમશ ધમધમતો જ રહે છે. એના ધાર્મિક આચારો પણ કોણ, સંતાપ આહિ વિકારોના પરિણમે છે. એવીં ભાઈ જ તપ, જ્ય, સ્વાધ્યાય, દાન, શીલ, શુદ્ધ ભાવના, પૂજા, પ્રભાવના આહિ ધર્માચરણનાં દરેક ભાણુસ પોતાના શુણોને અતુસરી ચુંટણી કરી દેશે. આટે જ આપણે આં માર્ગ આગળ વધી શકીશું એ વસ્તુનો દરેક પોતાના જન્મની સાથે વિચાર કરી નહીં કરવો જોઈએ.

સામાન્ય નીતિ, સંજનતા, સત્ત્વ, અહિંસા આહિ શુણો અનિવાર્યપણે જેના ભાગમાં ગ્રેગેલા હોય તે ભાણુસન કોઈ પણ ધાર્મિક સધનના ઇવા માટે લાયક જણાય છે. એમાં ઉણુપ હોય તો તે ભાણુસ ગમે તેરવા ધમપણા કરે તો પણ તે પણ આઈ પણ માર્ગ યશસ્વી રીત અતુસરી શકતો નથી.

પહિંત જાની કે આજાની ડોઢ પણું ભાણુસ ધર્માચરણ કરી શક એ એનો હક છે. ઇક્લાં ભણેલા અને પહિંત ભાણુસા જ ધર્માચરણ માટે લાયક હોય છે એવા નિયમ છે જ નહીં. ભાણુસ ભણેલો હોય કે તદ્દન નિરક્ષર હોય, ભાલ હોય કે વૃદ્ધ,

જાનો હોય કે મેટો હોય, અશીય હોય કે તવંગર હોય, ભાલ હોય કે વૃદ્ધ હોય, સ્વી હોય કે પુરુષ હોય એની રીત બોદલીત રહી દરેક જણ અતિ સુલભ એવી નવકાર મંત્રનો જાપ કરી શકે. ભાણુસ કામ કરતો હોય કે નવરો એંડોઝો હોય, લિધવાની તૈમારીના હોય કે નગવાનો સચચ હોય, ડોધ શુલ કામનો પ્રારંભ કરવાનો હોય કે પ્રાર્થિતિનો સમય હોય, ભાણુસ નવકાર મંત્રનો જાપ કરી શકે છે. એ કરવા માટે ડોર્જ લતતું ખર્ચ કરતું પડતું નથી. કે મહેનત પણ કરવી પડતી નથી. એવે મનને એવાં સ્વદ્ધાનો એ પોતાના મનને વિધર કરી તેને ધર્મમાર્ગ વાળાનો એ સુલભનાં સુલભ માર્ગ છે. એને ડોર્જ મોદી વિદ્યાની જરૂર નથી, ઇક્લાં એ સતત કરતા રહેવાની એવ પાણવાની જરૂર છે. એ એવ એક વખત પડી જય એવું એ માટે અન કરવાની પણ આવસ્કાતા નથી. અનેક સંતપુરો ઇક્લાં જાપ કરીને સુઝા ધર્મેલા છે. જાપમાં ચિત્નશુદ્ધિને અવકાશ મળ્ય જય છે. એ ચિત્ન ઉમેદા અધિયર અને અવળ માર્ગ હોડતું રહે છે, તે મનને આદ્ધકન કરવાનું કાર્ય જાપ કરી શકે છે. ડોઢ વ્યસના ભાણુસ જ્યારે વ્યસનને વ્યાધિન બની જય છે. ત્યારે તે પરવશપણે વ્યસનનો ગુંગામ બની જય છે અને તેના કષી પરિણમો બોગવે છે, તેમ જ આપણે ને જાપને જ એક વ્યસનનું ઇપ આપ્યે દૂધે અને તહાકાર થઈ જાઓ તો જેમ કુટેવના માદા ઇન્ન જોગવા પડે છે તેમ જાપના સુખ્યસનથી શુભ ઇણો આપણું મળે એ દેખ્યાતું જ છે.

નય કર્વની સુલભના અને તેના સારા પરિણમોની ભાવી આપણે જોઇ જાની જાનું જો એ આપણે પૂર્ણ તો નથી જ. આપણાનું હજુ અનેક આમીઝો કરી પરી છે, ત્યારે આપણી એ આમીઝો ડોર્જ અતીવે ત્યારે તે આપણી આમીઝો સુધારવા આપણું

આપણું મન સાથે જ્યારે આપણે વિચાર કરીએ ત્યારે એ નજી નાશવા મળે છે કે, આપણે પૂર્ણ તો નથી જ. આપણાનું હજુ અનેક આમીઝો કરી પરી છે, ત્યારે આપણી એ આમીઝો ડોર્જ અતીવે ત્યારે તે આપણી આમીઝો સુધારવા આપણું

अंक १]

प्रभु नामना ज्ञप

(६)

तद मने छ. परम् व्यारे कोई आपली भाषीओ अतावरो भट्ठे के ह्यारे आपलुने ते गची नथी. आपली पोतानी ए निदा अखी आपलुं ए अपमान थवुं ऐम अखी आपलुने कोई आवे छे. आपली निदा आपला गेहे करे ए आपले शत्रु छे, ऐम आपले भानीजे छीमे अने साँचे साँचे ऐना होय लेवानो आपले प्रयत्न करीमे छीमे. भारामां लाये गमे तेवा दोर होय परु ए उदाह कस्तारे ए केल्यु ? ऐम भानी होय अतावनाराना छता के नहीं छतां परु दोयो अने वणगाडवाने आपले प्रयत्न करीमे छीमे. आनी होवैष्ट हषि वासा अनशी देवा करे छे अरसपरस होयाई पलुने ए प्रयाण पद्मी लेरथी वदा ज करे छे अने आपले नवा शत्रुओ. पेहा करीमे छीमे अने आपला भानी लाविला निदकी हेके दिववादमां आपले होय ज निर्देश छीमे. अने आनी रीते आपली हाले वेळेशी हुपित करी सुझामे छीमे अने जे निदक आपलुने गमतो. नथी तेनी चेते ज आपले परु शेक निदकी ज सुनिका लज्जता थध जर्ख्ये छीमे.

जानीजनो निहाने पोताना दित्यितक गणे छे. निहां पोतानी आसपास होय ते सांड जेन गणे छे; कारखु ते घेथी पोताना होपेतु दर्शन जेमते थर्ह शके छे अने तेजो. पोताने सुधारनानी तक झड़भा रहे छे, तेजो निहाने पोतानो दित्यनी गणे छे, कारखु अने लावे ज ए सुधरी शके छे.

सामान्य भाषुमो तो शुं परु लवभदा संत भद्रात्मा जयुता भद्रानुलावा. पोतानी निदाथी चीडाय छे अने द्वेषना लोग अनी वेषे छे. अथी ज अमो भानीमे छीमे ते, पोतानी ज निदा

पोताना कने सांखणी ए आकरी साधन तपक्षां छे, आभनिदा सभा कने सांखणी जने ते परु सभतापूर्वक अने निदक तरह जरा लेवी परु तिरकारनी लावना राज्या वगर सांखणी ए कार्य तो कुर्ह भडान भुक्तिनिष्ठ आनी पहेचेला अहामुर्दो ज करी शके, काथपीयातुं ए काम नथी.

आपली पाठ्य आपली निदा अहेआर्ह करनारा वाला होय छे, ए आपले जातुमे छीमे. एमां साचा पोदा परु होय छे, वचनाना हवाईा परु होय छे, ए वल्ल वच्ये लगाई जगारी प्रेक्षक थर्ह आनंद भानानारा लेंदा परु होय छे, वधु वधत तो गरसभलुतीथी आपले डेहने शत्रु गणी ऐमीमे छीमे, परु आपले ए अधी आपतिग्रायी अचवा भारे प्रयत्न करवो लेईमे.

निदकी परु निदा कर्ती ए भडान होय छे. उक्तु भीने आपली निदा प्रत्यक्ष डे परेक्ष डे तेना भारे पोदी कठपा कर्ती नहीं लेईमे. भरारी लापार्मा एक सांपु वन्न छे निदकाचे घर असावे शेजारी एटवे आपला निदकतुं घर आपली नेहार्मा ज होय तो अहु सांपु. ओम थवाथी आपलुने एक वगर शेजारी युक भगी नय छे. आपले पोतानी निदा शांतिथी सांखणता रहीमे अने सामो जवाय नहीं आपीमे तो निदकी शब्द श्लेषे घुही थर्ह नय छे अने ए निरशा अतुलनी शांत थध नय छे अने धर्षी वधत ए आपलो प्रशंसक परु अनी नय छे.

ए आकरी लागती निदा सांखणवानी तप साधना आपले कर्ती ज रही. आमोनतिना साधना करवातुं अधारोने सुझे ए ज अवर्धना.

सामायिकमां
वांचवा भारे

उपाध्याय श्री यशोविजयल महाराजनो सर्व श्रेष्ठ अंश
ज्ञानसार-युज्यराती अतुलनाद साँचे अवश्य पांचा।
मुद्र्य इपिया २-०-० लग्नो:—श्री लैन व. प. स.—भावनगर

શ્રી વર્ષામાન-મહાવીર

લેખાંકણ લેખાંકણ લેખાંકણ લેખાંકણ લેખાંકણ

અધ્યાત્મિકના વીર સુભાષા:

ખાસ હૃત મહારાજન અધ્યાત્મ પાસે હાજર થયો. એણે વિગતવાર સર્વ હક્કાકત મહારાજન અધ્યાત્મ પાસે કહી, પણ એણે કમ ફેરણી નાખ્યો. પ્રથમ હક્કાકત પ્રનાપતિની કહેવા આંદી. એટલે જ્યારે એણે સ્વયંપ્રભાને મેડલવાની ના કહી ત્યારે તે હક્કાકત ચાલ્યાંતાં અધ્યાત્મનો પિતો બાળા ગયો. તેણે કહ્યું કે આવો પોતાની દાક્ષીનો પતિ થઈ એટલો અને રિપુત્રિશનું નામને બદલે પ્રનાપતિના નામથી જાહેર થયેદો મૂર્ખો પ્રનાપતિ તો અદૈભર 'યથાનામા તથા ચુણું' વાગો જ છે! એ તે વળા નીતિની અને ધરમની વાત ક્ષેત્ર મેળેઠે કરતો હોય! એને તે આંદી વાત કર્ણી શકે ના? એને એના તો દોષ કોણવીને હોણ હોણ જીવી ગયા છે હાથમાં તરવાર આદે તો પણ પરી જાય એટલા એના હાથ હવે તો કુને છે. મૂર્ખ માણુસ જણ્યાય છે. એવાને તો ચચ્ચીમાં ચુંચી નાખાય. આવા પોતાની પુરીને પરણુનારને શેના ઉપર લાંખી ચોડી વાત કરતા હોય? એક જીવી એની પાસે નિપુણી વાત કરી. મહારાજન અધ્યાત્મ હૃત ચાંસલે. એમ કહ્યું 'એ નિપુણ તો તેની પોતાની સાવડી અહેનનો દાડો છે. એને દાડો થાય તો એના આપને એ શું કહીને એલાવે?' એનો લાંખેજ પણ થાય, લિંગને પણ થાય એને પોતે પોતાના આપને સાગો પણ થાય. આવા સેંકડો નાતરા કરતાર એને દુનિયાના અધમ કુળમાં નામ નોંધવનાર એઓરામાન અહેનનો દાડો એ તેવા પીડ (નિપુણ) તું નામ લઈ એટલો થાય તેમાં તે શી સારવાર હોય? એ તો મંગતરાની જેમ ચુંચાદ્ધ જરો અને આપના નામને બગાડ્યો. એનો શર્ટો હોય જરૂર કરવો પડેશ. અદ્યાર સુધી એને બાળક જાણ્યી જતો કેચો પણ હિવસે હિવસે એ વધારે ને વધારે ઝાટટો જાય છે. પણ એની કારી ઉપર કટક શોને કે વાડેં નેણું!

ત્યારપણી ખાસ હૃતે જ્વલન જઈની સાથે થયેલ વાત કરી. એ છેલ્લી વાત સાંસળતાં અન્ધારાને ઉથ કોથ થયો. એની ગણુતરી પ્રમાણ વિદ્યાધરો ખૂબ હાલ્યા અને વિચારક હોવા જોઈએ. તેને બદલે જ્વલનજરી પણ મુરખાના ટોળામાં જળા ગયો એ વાતની એને બાબે નવાધ લાગી. જ્વલનજરીની વાત સાંસળતાં એનો કોથ ઘણ્ણો બાહર આવી ગયો. જ્વલનજરીએ પોતાની આખર ધરાદાપૂર્વક લીધી એમ કેને લાંખું. એણું કન્યારસ્તે સ્વચ્છ દર પણ ન કર્યો, એટલે એને તો બરાબર ડેકાણે લાવવો જોઈએ. એની નજરે જ્વલનજરી એક મામુકી વિદ્યાધર હતે. એના જેવાને બેસાડી હોવા માટે એની પોતાની એક લશકરી કુદ્દી જ પૂરતી જાણ્યા એમ તેતું ધારવું હતું. એને પોતાની પાસે મોદા અનાતોયે અને સરદારો હતા, તેમની પણ આવા વિદ્યાધરને ડેકાણે લઈ આવવા માટે જરૂર ન હોય એમ ધારી પોતાના વ્યાડા વીર સુલાદોને આજા કરી કે જ્વલનજરી પોતનપુરમાં હાત હોય, એને છતો પછી લાવવો. અને પોતાની પાસે રણું કરવો.

અધ્યાત્મિકના ખાસ ચુનંદા વીર સુલાદોની એક કુદ્દી પોતનપુરને જાર્જ પડી. આ બાદાફુર વીર લહાવામાં કુશળ હતા એને જ્વલનજરીને એક દિવસમાં ભૌંય લેગો કરી હેણું. એવી આશામાં નલચયસ રહી જરૂર પણ ગંબીરતા ધારણું કર્યા વબર જાણું રબવા નીકલ્યા હેણ તેમ મોજ કરતાં પોતનપુરને જાર્જ પડ્યા. એ ચુનંદા વીરાની કુદ્દીમાં લાવૈયા સુમારે એક હળાર હોય. જાતાં જાતાં રહ્લે પછીઓ અને આતાં પીતાં પોતનપુરને પાદરે આવી પહોંચ્યા. પોતનપુરની બધારના નિવાસ ર્થાનમાં જ્વલનજરી હોવો પોતાના પહાડી, મુલડમાં જવાની તૈયારી કરતો હોતો. એને સમાચાર સહ્યો કે એક લશકરી કુદ્દી પોતાની સાથે

अंक १]

श्री वर्द्धमान-महानीर

(११)

पराभरी करवा आदी आवे छे. एमां २४. बोडी, गाडा दगेरे पछु डिक संभवामां आवे छे. एवा समाचार मणतों पोताना विद्याधरेने साथे लड एसे सामनो करवा तैयार थड गयो. एषु प्रनपतिनी के निष्ठ अश्वीनी महान न आगी अने पोते जले ४४ अडार पडो अने आरे सापो लगानी एक हिस्तमां आभी अश्वीनी हुक्कीने हडानी दीपी. एनी पासे तो लडानी एनी एवा विद्याधरी हती के एना विनान पासे अश्वीना सैनिका दिहमुख थड गया, एना अनेक प्रकाशा राखोनी विविदता अने कार्य लेधने शमना तो होयडेश उडी गया. आपारे ए लडा आपेली आभी हुक्की पाढी हडी नासवा लागी त्यारे तेने ज्वलनजरीये कुँवरायुँ के पोते जले महाराज अश्वीन साथे लडवा तैयार छे अने हजु तो तेना मनमां काई अगणामा रुही गट्ठ होय तो जले लडवा आवे. ज्वलनजरीने वीर्यवान पुडकर सांखों अश्वीनी, हुक्कीना अवेदा भाषुसो पोआरा भाशी भया. ज्वलनजरीये ज्वाली दीपुँ के पोते अने पोताना विनाप विगेर लडवा तैयार के अने शैरेचा भाईने रथावर्तिगिरि पर लडवा तैयार रहेचे. नाची छुट्टा लडवैया साथे महाराज अश्वीन तस्व आ प्रभाणे सीपुँ आल्लवान मौक्की आप्यु.

महा विश्व भाटे घने भाजुओनी तैयारीओ

पोतानपुरमा मोटा पाया पर लडाईनी तैयारीओ आदी. अनेक राजनी साथे प्रलपतिने भेज होते अने तेओः अश्वीनी उद्देश वर्त्तुङ्क्यी तेनी विनेश थर्च गया हता. तेओ तेम ४४ अश्वीना संगंधी राजनी. तेनी कुम्हे आव्या. पोतानपुर असारे तो लकडरनी आवशी जेवु थर्च पछु. लां खाथी, रथ बाडा, तीर, कामहाँ, धतुप, विविध दृष्टिगो, तस्वारै, दोलै, भाथायोना टग्ला थवा मांड्या अने आपानी वसुओना डोहारे लरवा मांड्या. आभा नगरमां लडाईनी ४ वातो आकती हती. काई अश्वीनी अधमता गाता हता तो

काई प्रनपतिन्ये आ नक्कीमो सुतेलो सर्प जगाहनो छे, एनी वातो करता हता. आणो समुद्राय एक-मते प्रनपतिनी भाजुओ थड गयो हतो. धाखु राज अने मोटु लकडर तैयार थवाना समाचार रत्नपुरमा राज अश्वीने भेहोच्या.

एक तो पोतानी आस उक्कीने ज्वलनजरीये छेद दीयो हतो. ते वात अनी त्यारथी अश्वीन धूंआपुँवा थड रहो हतो अने तेमां प्रनपतिन्ये लकडर एक्कु उरवा भाँड्युँ छे, एम वात भाल्या, एटेक्के एनी उडिरुमां धेष्या वधारो थड गयो. एषु मोटा पाया उपर लडाईनी तैयारी करवा भाँडी अने न्यारे आ लडाई करवा पोते जले ज्वा छुच्छे एनी वात जाहेमां भुजा तारे एना भंत्रीमंडणे धर्षी नवाई लागी. भंत्रीमंडणे पोताना महाराजाने ज्वालायुँ के प्रनपति तो एक सामान्य सामंत राज हो, अंडियो राज नानकडा शन्यने ज्वाभी छे. एवानी सामे महान राज राजेक्करने लडवा ज्वानी जडर न होय. ए काम तो एक सरदार पछु करी रहे, पछु भंत्रीमंडणनी आ सदाह अश्वीने रुपीकारी नहि. एषु उडायी रीते तो भाव एटेला ज वात करी के ज्वलनजरी विद्याधर पछु सामेल थयो छे, अने ए ज्वर पोताना वेवाई प्रनपतिने महान करवा अडार पडो अने ज्वलनजरीये तुरतमां पोतानी युनंही लकडरी हुक्कीने शिक्षत आभी हती तेथी तेने पछु शिखाभषु आपवी ज्वेप्य. आ वातमां महाराजनी भझमता ज्वेप्य भंत्रीयो भौत रह्या अने मोटा पाया पर रथावर्तिगिरि तरइ प्रयाणे करवानी तैयारी करवा लाय्या. पछु अंद्रभानेथी हुक्कीकत वधारे भंत्रीर हती ते वात शद्यातमां अश्वीने ज्वेप्यमां भंत्री भंडने कडी नहि. त्यारथी हूत भारिचीतु अपभान विष्टु उर्चु हतु अने तुंगजिरि पर सिंहने एषु भार्या हतो त्यारथी निभितत भंत्रीनी आगाही अनुसार अश्वीन महाराज विष्टुने पोताना अनमां पाडो हरीक आनता हता. आ वात एषु भंत्रीमंडणनी ज्वानगी सभामां

(१२)

श्री कैन धर्म प्रकाश

[कारताक]

कही संख्याना अने खरी रीत पोते निष्पृथि लय
साभतो होता ते वात कही एट्टेक्से कही वभत
निष्पृथि अने अचणने पोतानी समक्ष तहेनातमां
ओकावना प्रयत्न करी जेथो, पथु तेमां महाराज
क्षम्या नहि एट्टेक्से निष्पृथि सामे लडवानी वैपला
करावा. हवे विद्याधर साथेनी लडाई करतां निष्पृथि
अने अचण साथे लडाई होय एतुं आमुं लवद्य
धर्ष गयुं.

हरभ्यान पोतनपुरमां खडु मोटा पाया उपर
तैयारीमा चालवा लागी. ज्वलनजटी धर्षे पैतान-
निक अने कुशण लउवें होतो. अनी पासे अनेक
विद्याओ डतो, अनो अर्थ एम समजवानो के ए
महाविज्ञानी होतो. शत्रुघ्नना अनेक अवनवा
प्रयोगे ए कही जाणुतो, वायुवान अने हस्तगत
हतुं अने वैताखनी दक्षिणत्रिषुणीना विद्याधरो. पर
तेनो आरे कामु होतो. एबु जेहु लाहुं के अचयीव
साथे महान विघड अनिवार्य होतो अने तेमां
मुख्य लडत निष्पृथि अने अचण सामे ज थवानी
छे, एरुते एबु निष्पृथि अने अचणने विज्ञानमां
तैयार करी दीधा. पोतानी पासे ने निज्ञानी
दिशिष्ट चावीओ प्रयोगसिद्ध होती ते खूब ब्रेम्पूर्क
निष्पृथि अने अचणने अतानी दीधा अने वैज्ञानिक
नजदे पोताना ज्वानी ज्वानी भास तैयार करी
दीधा. राज प्रग्नपति तो हवे धरडा थर्ष गया होता,
अति भोज-शांभवी एबु पोतानुं शरीर लगाडी
नाम्युं हतुं, एट्टेक्से राजकार्य एबु छोकराणोने
लगानी दीधुं हतुं; अत्यारे नामना राज तरीक
प्रग्नपति होता, पथु एक लगभग वानप्रस्थ जेवा थर्ष
गया होता अने लकड़ी सतो तो अने छोकरा निष्पृथि
अने अचणना हथमां सांपाई थर्ष होती, निष्पृथि
अने अचण 'अत्यारे पोतनपुरमां खूब अचण
चावी गया होता. अने लाखओमां अचण मोटा
लाई होता अनां निष्पृथो भडिमा वधारे हेजातो
होता अने अचणने पोताना सापडा लाई निष्पृथि
पर एट्टो एम होतो के अने लोडा तरइथी विशेष
मान के एम भगे ए हडीकत अचणने खूब भमती

होती अने अनली दरेक तोके ए निष्पृथो वधारे अचण
पाठ्वामां आनंद देतो होतो. अना संक्षिप्तमां पथु
निष्पृथि अचण पडे जो वातनी अहोपाई के धर्षी
थती नहेती, अने डाई वभत निष्पृथि तरह आर
थो नहेतो अने दरेक आभतमां निष्पृथि अचण
रहे अमा ए पोतानी वडीवाई आनतो होतो.
एक रीत कहीजे तो ए दाम लकड़ीनी जेडी
ज होती अने सावुकीमाना होड़ा होवा छतां
जाणे सामा लाईजो होय एन वर्तना होता, अने
लाखओमा गोया पाया पर लकड़ी जैमारी करवाना
सामेव थर्ष जया, देश परहेशरी अननन भंगाव्य,
डाईजो लर्ही अने लियारो सभाराया, लानाव्या
अने जोहाया. पार वयना रेहो, वैडाओमा, डोरो
अमि अचयो तैयार कर्ही, एकदा कर्ही अने अने
असाधारण भमारवाणा होवाथी लडवा चाई तैयार
धर्ष गया. हुन्ती करीने शहीरो तैयार अनाम्युं.
ज्यारे तेमना लाखुमां आम्युं के महाराज अक्ष-
श्रीव आओ मोरव्या पोतानी उपर मांती एहो
छे त्यारे तेमने खूब आनंद थयो, तेजोनुं लडाईक
भमिर झालणी रह्युं अने तैयारओ खूब मोटा
पाया पर कही लडायक भाषुजोनी पथु धर्षी भोटी
साम्या एकी करी.

प्रयाणु करवाने अचणवे हिवें आक्ष भोटी
राजसक्षा लगी तेमां भंगीओमे भहाराज अक्षश्रीवने
पोताने लडवा ज्यानी लडव नही एम विजमि
करी, पथु अक्षश्रीव आओ वात राणीदाणी नाम्पी.
एबु तो निष्पृथो भडकडी लडवा मांती, एबु प्रग्न-
पतिना नाम उपर लुक्कदा मांतुं, एबु निष्पृथो
छोकरो थयो ते पोताना भापने शुं कहेशो, अचणने
इया सगपेहो ओकावयो अने प्रग्नपतिने शुं कहेशो
तेनी वात पर राजसक्षमां खूब भन उडानी.
निष्पृथो अना खुनो भामो पथु थाय, लविन्ते थाय,
अचण ए छोकरानो भामो थाय अने प्रग्नपति
अनो दुवो पथु थाय अने एवां एवां अनेक सज-
पेहो लगाव्या. अते एबु लडाइनां रखुरीगडों
हुंकाव्यां अने पोते जाते लडाइमां भतरहो एम
जहेरात करी.

(चानु)

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

→(१६)←

— दीपथं ह उवाण्डाव ३१

[(शिव) नृत्यमध्ये द्वितीय (शिव) नृत्य]

ପ୍ରକାଶମ୍ବଳ ଏହା ପ୍ରକାଶମ୍ବଳ : ଅନ୍ତର୍ଗତ ପ୍ରକାଶମ୍ବଳ

(१४)

श्री जैन धर्म प्रकाश

[कारतंड]

क्रमांक	अतिथेय	समवाय (बृहद् वाचना)	समवाय (लघु वाचना)	पवयणसानुद्धार	अलिघान- चिन्तामणि
३४	प्रभुने ऐसवाना स्थण- नी लुभता	x	१६	x	x
३५	भनोऽग्ने शम्भास्त्रिनो प्रादुर्लिखि	२०	x	२७	३४
३६	धक्षी हारा याभेश्वरुं वीजावुं	x	२०	x	x
३७	डाटडिटे वै वैशेतुं भावुं	x	x	५	५
३८	अतुर्मुखतः	x	x	२२	२३
३९	नव्य गढ़	x	x	२३	२२
४०	सुवर्णु उभगो	x	x	२४	२१
४१	पक्षीओनी प्रदक्षिणा	x	x	३१	२६
४२	वायुती अतुर्कृष्टा	x	x	३२	२८
४३	जृक्षतुं वैदन	x	x	३३	२६
४४	हुहुलितुं वादन	x	x	३४	२७
४५	ज्वरन्यथा डायोडिटे वैवानुं सानिध्य	x	x	x	३३

इमनी वक्तासही—समवाय (सु. ३४)मां
ने क्रमी ३४ अतिथेयो गण्यवाया छे ते इमनो,
अक्षयपेणस्त्रिनो ३४ अतिथेयो भाटे निहेश्वरा सहज
वीरे नव्य गढो प्रभागे विचार करतां जल्लाय छे के
समवायां सौथी प्रथम देवकृता ओळ अतिथेयी
शक्तिआत उराठि छे. त्यार आठ चार सहज अति-
थेयोनो, अना पछी देवकृत छ, पछी कर्मक्षयज्ञ ओळ,
त्यार पछी देवकृत आठ अने अना. पछी कर्मकृत
चौहोना उल्लेख छे. आ आपत छुं नीचे मुज्ज्य
दृश्यतुं छुं:-

हे. १, स. २-५, हे. ६-११, क. १२, हे. १३-
२०, अने क. २१-२४.
आ ७५२थी लोर्ड शक्ताशे के देवकृत अतिथेयो

प्रथु कटडे अने कर्मक्षयज्ञ ए कटडे दर्शावाया छे.
आ इम अन्य छोमो साथे सरभावतां नीचे मुज्ज्य-
ना प्रभो चुक्के छे:-

(१) समवायां अपायेतो. इम सहेतुक छे के
निर्णेपुठ?

(२) नो सहेतुक होय तो सहज, कर्मक्षयज्ञ अने
देवकृत एम वर्गाने अतुसरतो ने इम अन्य
अथेयां छे अने ले स्वाक्षाविक अने युक्ति
सुझा जल्लाय छे तेन जतो. करी उपर्युक्ता-
विलक्षण. इम राखवातुं छुं कारणु छे?

समीक्षा—नभादिनी. अवसिथतां ए देवकृत
अतिथेय उम उल्लेखय द आनो उत्तर वीतरागस्तोत्र
(प्र. ४, श्लो. ७)तुं प्रभानन्दस्त्रित विवरण नामे

अंक १]

तीर्थकर्ता विष्णुति : अतिशयो आमे अतिहायो

(१५)

हुर्गपदभेदकाशा (पत्र ३३) नीचे भुज्य पूरो
पाडे छे:-

तीर्थकर्ता दीक्षा ले ते सभमे ईन्द्र वज्रांडे केश,
नम ईस्याहिती वधवानी शक्तिने हस्ती नामे छे.
आम आ हेवतुं कृत्य होर्धि आ अतिशयने 'हेवकृत'
कहेवामां डोर्धि वाच्यो नथी,

आमंडण ओं हेवतुं कृत्य छे तो ए अतिशयने
हेवकृत न गणतां कर्मक्षयज्ञ कहेवातुं शुं कारणु छे?
आ प्रश्न आ विवरणामां उडावायो नथी तेमज तेना
उत्तर अली तो आयायो नथी.

***अर्हत्तुतुति**-आ २३ पदना संकृत इतिनी
ओंक द्वाथपेयो लां. प्रा. सं. भ. भ. छे. अनो
संक्षिप्त परिचय मे ।) C G C M (Vol XVIII)मां भे आयो छे; ज्यारे प्रत्युत इतिनी
नो॒ध आद्य अने अंतिम पदना उद्दरभुपूर्वक मे
D C G C M (Vol XIX, pr 2, No 579)
भां लाध छे. आ कृतिना कृत्यु नाम जाणुवानां
नथी अंग्रेज्युं ज नहि पछु अना वास्तविक नामनी
तेमज आ कृति डोर्धि स्थग्येथी प्रकाशित थध होय
ते तेनी भने अभर नथी. ए भाष्यत प्रकाश पडे
ते भाटे हुं अनां आद्य अने अंतिम पदो अनुक्रमे
अली २४४ करुं शुं:-

"नित्यं विस्वेदस्त्वं निर्मलता क्षीरगौररुधिरस्त्वं च
स्वाद्याकृतिसंहनते सौरूप्यं च सौरभं च

सौलक्षण्यम् ॥"

"यस्येह चतुर्ब्लिशत् प्रवरगुणाः
प्रातिहार्यलक्ष्म्यशास्त्रैः ।

तस्म नमो भगवते त्रिभुवनपरमेश्वरायाहिते
गुणमहते ॥ २३ ॥"

पदविज्ये अहुपलहेवतुं ने स्तवन रख्युं छे, तेमां
३४. अतिशयो नो वापिलारे उद्देश छे, +यार सहज
अतिशयो नुं संक्षिप्त वर्णन छे. अने ३४ अतिशयो नुं
वर्णकरण छे. आ स्तवननी शब्दात. "प्रथम निर-
क्षर प्रश्नभीजे" थी डोर्धि छे.

* आ नाम भे योजन्युं छे.
+ आमां वातरागस्तोत्रना द्वितीय प्रेक्षासनी काया
लेवाप छे..

आ पदविज्ये शान्तिनाथतुं स्तवन रथी ओं
दारा कर्मक्षयथी उद्भवता गणितार अतिशयो नुं
निर्वयु करुं छे, ज्यारे नमिनाथना स्तवन द्वारा
हेवकृत गोगस्थीस अतिशयो वर्णव्या छे.

दिग्घिर भान्यता-दिग्घिर भान्य शेत्रीस
अतिशयो गाने छे. ओं अंडे ज नहि, पछु अना सहज,
कर्मक्षयज्ञ अने हेवकृत येम नाथु वर्ण पछु स्वाक्षरे
छे, परंतु एं वर्णदी संभ्या परत्वे संवेतांपर भान्य-
ताया लिन भत्त प्रश्नावे छे.

'हस सहज अतिशय-(१) शरीरतुं अ-पतं
सुंदर इप, (२) शरीरनी अतिशय सुज्ञध, (३)
प्रस्वेदनो अभाव, (४) निहारनो अभाव, (५) डित,
मित अने प्रिय वाणी, (६) अनन्य वण, (७)
लोहीनी वेतता, (८) शरीरमां १००८ लक्षणो,
(९) 'समवतुरस' संस्थान अने (१०) 'वन-
ऋषभ-नाराय' संहनन.

दृष्ट कर्मक्षयज्ञ अतिशय-(१) तीर्थकर्ता न्यां
होय तांथी सो योजनना सुभिक्षता, (२) आकाशमां
गमन, (३) यतुर्मुच्यता, (४) अद्यानो अभाव,
(५) उपसर्गोत्ती अभाव, (६) क्ववाणारसो अभाव,
(७) सर्व निवातुं स्वामिता, (८) नाम अने डेशनी
अवस्थितता, (९) नेत्री अनिभिपता, अने (१०)
आयायी रहित शरीर.

योह हेवकृत अतिशय-(१) 'अर्धभागधी'
आया, (२) परस्पर भितता, (३) दिशाओंतु
निर्भण थवुं, (४) आकाशतुं निर्भण थवुं, (५)
सर्व नामुयोनां इप, इप वर्णरेनो सभकणो उद्भवन,
(६) ओंक योजन पर्यंतनी पृथ्वीतुं निर्भण थवुं,
(७) तीर्थकर्ता यादे त्यारे अभनां अरण्यनी नीमे
कमलतुं स्थापन, (८) आकाशमां ज्यनाद, (९)
भांड अने सुगंधी पवनतुं वातुं, (१०) गंधोदक्षनी
वृष्टि, (११) वायुद्गमार द्वाया भूमिमाना कंटकातुं
हुरीकरण, (१२) आनन्दमय सृष्टि, (१३) धर्मचक्र,
अने (१४) आठ भंगणतुं प्रखु सांये यालतुं.

आ प्रभाषे, नीचे भुज्यभीडी, युधगनकृत
धृष्टिधनीसीं भां ३४ अतिशयो गणुवाया छे..

* ज्यो नियमसद (गा. ७१).

શ્રી પશ્મોત્તરસાર્વિશતક-સાર્થ

શાસ્ત્રકાણ્ડાંશુઃ (૩૧) :

અન૦ આવાર્થી વિજયમહેન્દ્રસુરીબ્રહ્મ મહારાજ

૫૦ (૧૩૦)—નાનુ પલ્લોપમનો આયુષ અને
નાનુ ગાઉની શરીરની ઉચ્ચાઈવાળા યુગ્મિયાને ૨૫૬
પૃષ્ઠકરંಡક કહેવા છે, એ પરિયોપમનો આયુષ અને
એ ગાઉની શરીરની ઉચ્ચાઈવાળાને ૧૨૮ પૃષ્ઠકરંડક
કહેવા છે, એક પરિયોપમનો આયુષ અને એક
ગાઉની શરીરની ઉચ્ચાઈવાળાને ૬૪ પૃષ્ઠકરંડક કહેવા
છે તેનાં પૃષ્ઠકરંડક શખદવડે શું અહણ કરવું ?

૬૦—પૃષ્ઠિંશા ગ્રહણ કરાય છે કેમ નાહના
શરીરના પ્રમાણુવાળા અમારે એક પૃષ્ઠિંશ છે,
તથા મોટા પ્રમાણુવાળા તેઓને તેથા હોય છે,
યદુક્ત જીવાભિગમ દીકાર્યાં—આન્તરદૌપયકા
મનુષ્ય અણ્ણે ઘનુશતાન્યુચ્છિતા વક્તવ્યાશ્રતુપણ્ણિ:
પૃષ્ઠિકરણદ્વારા: પૃષ્ઠિંશા: બૃહદ્પ્રમાણાનાં હિતે
વહ્વો ભરવંતિ ઇસ્તાદિ ॥

ભાવાર્થ—આન્તરદૌપયના અનુષ્ટો ૮૦૦ ધતુઅની
ઉચ્ચાઈવાળા ૬૪ પૃષ્ઠિંશા કહેવા તે મોટા પ્રમાણુ-
વાળાને વધ્યા હોય છે એ પ્રમાણે આમળ યુગ્મિયાના
અવિકારમાં પણ રહેલ છે. ॥ ૧૩૦ ॥

૫૦ (૧૩૧)—મેરુપર્વતની પથિન દિશામાં
સમભૂતલા પૃથ્વીથી આરંભોને અનુક્રમે ધર્તી પૃથ્વી
નસીનાવતી અને વપ્રવિજયક્ષેત્રની અંદર એક હન્દર
યોજન ડું થઈ અછ છે તાં રહેવા કેટલાક ગામો
અધ્યાગામ કહેવાય છે, તે પ્રદેશને વિષે શીતોદા
નદી પણ સમભૂતલાની અપેક્ષાએ એક હન્દર યોજન
નાચે વહે છે, જ્યાંતદારેની સાથે જોડાયેલી જગતી
અને સમુદ્ર એ અને નનીની અપેક્ષાએ હન્દર
યોજન ઉપર વર્તે છે, તો પછી જગતી ડોના ઉપર
રહી છે, અને શીતોદા નદીનું જળ ડોના રીતે
સમુદ્રમાં પ્રવેશ કરે છે ॥

૬૦—અધ્યાલેના ગામની છોડાએક હન્દર
યોજન બાચી ભૂમિદ્ધાં લીત છે તેના ઉપર જ્યાંત-

દારયુક્ત જગતીની ભીત રહી છે, તેમ જ શીતોદા
નદી જગતીની નીચેના લીતને એક હન્દર જોજન
સુધી બોટાને સમુદ્રમાં પ્રવેશ કરે છે એથે એમાં
આઈ જાતની અનુપપત્તિ નથી એટલે બાદ નથી એ
પ્રમાણે દોક્ષપ્રકાશના સ્તરમાં કહેલ છે.

વિજયે નહિનાવત્યાં પવપ્રારબ્દે ચાન્તર્દર્શિન.
॥ સહસ્રોજનાન્યુણ યામા ભવતિ કેચન
॥ ૨૪ ॥ તતોઽધોલીકિક યામા ઇતિ તે સ્વાતિ
મૈયોઃ ॥ તેષામને સ્થિતામૂર્મિ મિત્તિ રોધ્ય-
મિત્તાર્થિવમ् ॥ ૨૫ ॥ તતૈવજગતી મિત્તિદ્વયન્ત-
દ્વારાજિતા ॥ ઉર્ધ્વસ્થિતાઽધોગ્રામાણાદિદ્વારિબ
કૌતુકમ ॥ ૨૬ ॥ શીતોદાપિ લીલાભાવાદિ-
વાડ્યોગામિની ક્રમાત ॥ યોજનાનાં સહસ્રેષુ
યાતિભિત્વા જગત્યછધ: ॥ ૨૭ ॥

ભાવાર્થ—નવિનાવતી અને વપ્રવિજયની
વચ્ચમાં એક હન્દર યોજન ડોના ડેવલાક આમો રહેલા
છે, તથા તે અધ્યાલેના ગામ તરીક પ્રસિદ્ધ છે,
તે ગામેની છેડે સમુદ્રને રોકવાને માટે જ હોય નહિ
એમ ભૂમિદ્ધાં લીત છે, તે લીતના ઉપર જ્યાંતદારથી
શોભાયમાન અધ્યાલેના ગામેના આક્ષર્ય જોવાની
ધર્માથી જ હોય એમ તે લીતના ઉપર જ જતી
રહેલ છે, શીતોદા નદી પણ સ્વીના સ્વભાવથી જ હોય
એમ અનુક્રમે નીચે જતી એક હન્દર યોજન સુધી તે
લીતને બોટાને સમુદ્રમાં પ્રવેશ કરે છે ॥ ૧૩૧ ॥

૫૦ (૧૩૨)—પુષ્ટરધર્દ્દોપને વિષે જે નદીઓ
આનુપોતર પર્વતની સન્યુષ છે તે નદીઓનું જળ ક્ષ્યાં
નય છે ? આગળ તો સમુદ્રને અભાવ છે અને આનુ-
પોતર પર્વત તો ચારે બાજુ શોણાકારે રહેલ છે:

૬૦—તે નદીઓનું જળ ભાનુપોતર પર્વતના

૪૦ (૧૩) ૪૧

नीचेना भद्रेशने विष्णु जय छे, क्षेत्र सभासनी भाँडार नहींओनो असाव कल्पे छे तो पुष्करवर समुद्रमां तेमनो गमन डेख संलवे ए विचारवा योग्य छे, दोक भ्रष्टाचां ए ग्राणे छे—

“तह इह बहिमुङ्ड सलिला पविसति य नरनगल्य आहोत्ति” तथा इह पुष्करार्धे बहिमुख नघः परतः समुद्राडभावात् नरनगल्याऽधः स्थलविशेषेषु प्रविशन्तीति कविचित्तु “ठाणोरे भणियगिणे पुक्कर बहिगामिणी ड सलिलाओ”। चिदित्तु नाणुसनगं पुक्कर उदहि समललीणा ॥१॥ इति गाथा दृश्यते परं भातुपोत्तरनगात् बहिनघ भावस्योक्तवात् कथं पुष्करोदविगमनं तासां संभवतीति चिन्तयम्”

लापार्थ—आ पुष्करार्धदीपने विष्णु बहिमुङ्ड नहींओ आगण समुद्रनो असाव होयाथी नानुपोत्तर पर्वतना नीचे रथण विशेषमां प्रवेश करे छे, डाढ रथणे आनंगसूत्रमां आ प्रभाणे डेक्के डुपुष्करार्धदीपनी भाँडार गमन इतनारी नहींओ भातुपोत्तर पर्वतने भेदीने पुष्करर समुद्रने भणे छे, आनी गाथा दैध्याथ छे, परंतु भातुपोत्तर पर्वतनी

समुद्रमां तेमनो गमन डेख संलवे ए विचारवा योग्य छे, दोक भ्रष्टाचां ए ग्राणे छे—

“एव नरोत्तरनगाऽभिमुखाः सरितोऽखिलाः॥ विलीयन्त इहतेतः परंतासाममायतः ॥ ७५७ ॥

लापार्थ—ए ग्राणे भातुपोत्तर पर्वतनी समुद्र अही सर्व नहींओ विष्णु भागे छे क्षरशु ड आगण नहींओ नहींओ असाव छे, न्यानांग सूत्रमां सम्म स्थानांमां आं पाइ छे,

“पुष्करवरदीपहृद पुरत्थाभिमुहीओ पुष्करोद समुद्रं समुपेति । पुरत्थाभिमुहीओ कालोद समुद्रं इत्यादि”

लापार्थ—पुष्करवरदीपार्थना पूर्वना अर्ध भ्रष्टाचां सात क्षेत्रे ते प्रभाणे छे विशेषमां पूर्व तरङ्ग वहेती नहींओ पुष्करवर समुद्रने भणे छे, अने भवित तरङ्ग वहेती नहींओ कालोदपि समुद्रमां पडे छे अत्र सांक्षात् पाह दैध्याथ छे तथा ते नहींइ ओनो पुष्कर समुद्रमां गमन योग्य जे. ॥१३२॥

श्रीयुत भालुबाई इगनाथनो स्वर्गवास

संवत् २०१६ ना आसो वडी फील छङ्ग ने अगणवार्त्ता देव अवार्दमां श्रीयुत नरेत्तरगाठक (भालुबाई) इगनाथनो आगणपत्रास वर्षनी वधे स्वर्गवासी थयेव छे, तथी आ सालाना कार्यकरो भहु न दिव्यीर थया छीओ.

श्रीयुत भालुबाई सारी तंडरस्तीवण्णा युवान डता, तेमनी रुख्याइरही आती डती, वगी खाला घीरामा नियमीत डता, त्वलावे आनंदी, हुसमुखा अने भिवनसार डता, अम डेहवाय छे के तेमने अत्यार सुधी कौळी पाण जलनी मांहगी आवी न डती, स. २०१६ ना आवण माजमां तेमने ताव आवेव डतो, ते ताव लग्जग होढ मडिने उतरी जयेव अने तेमनी तावापा सुधरती डती डती, पछु इरीवार ताव आवी अने ते ताव लज्जवण निवायो, ताव सिवायणीन कौळी पाण गांडगीना आहो, नडोता तेथी आशा राखवामा आवती डती के ताव उतरी ज्येहे पाण ते आशा देण्यार निवाय.

तेजो भट्टिड थया पडी अने आवती श्री गंगारविलयल स स्फुट आठशणाना एक डलासना शिक्षक निमाय डता, थेणा वर्षी सुधी पडितलु जगल्जवनदास सावे पाठ्याणगा चाक चंदण शिक्षक तरीके कार्य कर्तु डतु, तेजो ने पडितलुना सहवासने लीप धार्मिक

Reg. No. B. 156

अवसरामां सारो लाला मणेहि हुतो, तेमणे पंडितलुना सहजारथी श्री आत्मानंद सलाना यार पांच अधिसुं लापांतर क्षेत्रे हुतुः

तेजो स्वर्गस्थ कुंवरलबाईना सहवासमां आन्या, तेमणे तेमनी भुक्ति अने अतुरार्थ यापणी तेमने सलाना पार्टी दृष्टि नोकर तरीके राख्या. तेमना सहवासने लीथे आलुबाईमां धार्चिक संक्षेप याप्त छुता, तेजो हर बौद्धो पणगी पठिक्कमलुः लालुवता छुता, वर्णी अणीना तिंमेहोमां संत्रे नवपदलुना पूजोमां लाग देत्रा हुता.

तेजो आनंद प्रेसमां मुक्तिहर तरीके वर्णी शाम करता हुता तेथी तेमणे आपणानामा नोकर कास संबंधी सारो अनुलव प्राप्त कर्तो हुतो. तेथी दृष्टि पछु व्यक्तिने कांट्य पव छपावतुः छाय तो तेजो आलुबाईनी सलाल केता. आलुबाई शुं लभतुः, क्या त्रेसमां छपावतुः, केवा काणग वापरवा वगेहि कर्तो आपीने ते सहगृहस्थने संतोष आपता हुता.

स्वर्गस्थ कुंवरलबाईना अवसान पाठी सभातुः लगलग णधुः डामडाळ श्रीखुत आलुबाई इत्या हुता अभी तो ऐटुः नथी. तेजो सलाना पार्टी दृष्टि नोकर छे अभी तेमने मानता नहि पछु पोते सलाना अेक कार्यकर छे तेवी दाते कार्य करता हुता. मासिक अगेहुः संचालन तेजो न करता हुता. अने स्वर्गस्थ कुंवरलबाईना अवसान पाठी ओज न सुन्नी मासिक अविस्तपेहि चालु रहेल छे ते तेमने आभारी हुतुः. तेजो अभी कहेता हुता के आ मांडणीमांदी साज थया पाठी हुः ए यार महिना हवाहिर करवा जधश अने त्यार पाठी भारे सला जिवाय थील डेढीनी नोकरी करवी नथी.

तेजो मुक्तिहर तरीके अहु पंक्तेवा हुताः तेथी मुनि महाराजे तेमानी छपावतानी आपडीया तेमने छपाववा आपता हुता. आलुबाई ते आपडी संबंधी णधुः न कार्य करता हुता. अने मुनि महाराजानीने संतोष आपता हुता. तेजो आपडीनी प्रस्तवना पछु लगी आपता हुता.

आपा धर्मश्रद्धागु अने अतुलवी कार्यकरनी सलाने न पुराय तेवी ओट परी छे. शासनदेव तेमना आत्माने शान्ति आपे अने तेमना कुटुंभीजनो पर आपी पडेल आकृतेन सहन करवानी शक्ति अने घोर्य आपे ए न प्रार्थना. उ शान्ति.

स्वर्गवास

संघर्षी वृजलाल जेच हंलाई आसो वाट उ शुडवारना शेज ५० वर्षना उभके स्वर्गवासी धरेव छे. तेजो क्ष्यभावे हवमुणा अने भित्तनसार हुता. आपडी सलाना वगेशी वापिक सलासह हुता. तेमना स्वर्गवासी अवाने लायक सलासहनी ऐट परी छे अमो स्वर्गस्थना आत्मानी शान्ति इच्छी तेमना आसजने गर्दवे द्विसोऽु दर्शावीये छोको.

मरणशयान : सलाना भुजवालव, दाशगढ-लालनगर